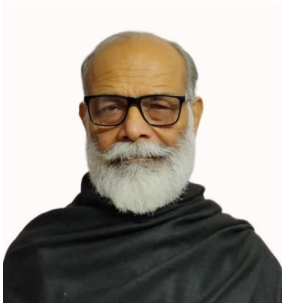

सुरेश वशिष्ठ

ई-मेल-sureshvashisht@gmail.com

दागी

"अरी जोहरा, तू किस गाँव या शहर की है?"

"पता नहीं। मौसी कहती है, मेले में अम्मा-बापू से बिछुड़ गई थी। मौसी ने देख लिया तो मुझ पर दया की और अपने साथ यहाँ ले आई।"

"उस समय तू कित्ते साल की थी...?"

"यही नौ-दस साल की रही होउँगी। मौसी तो यही बताती है।"

"हिन्दू है कि मुसलमान?"

"हिन्दू हूँ। मौसी बता रही—उसे जब मिली थी, माथे पर चंदन तिलक था और गले में रुद्राक्ष की माला थी। अम्मा ने मेरे लिए मेले से खरीदी और मुझे पहनाई थी।"

"फिर यह जोहरा नाम क्यों रक्खा?"

"मैंने कहाँ रखा... मौसी ने रखा।"

"अम्मा-बापू, चाचा-ताऊ, नाना-नानी...किसी की सूरत तो याद होगी?"

"हाँ, सूरतें तो थोड़ी-थोड़ी पसरी हैं, यादों में! मुँह अंधेरे कार्तिक नहाने जाती थी तो एक बुआ बहुत प्रीत रखती थीं। कोठे की पहरी से एक रोज उसे सड़क पर देखा। नीचे भागी भी, लेकिन जाने कहाँ वह भीड़ में गुम हो गई? गाँव याद होता तो चली न जाती मैं, यहाँ नरक में क्यों पड़ी रहती?"

"ना...ना... पता चल भी जाए तो भी, गाँव अब वापस मत जाना। भूलकर भी नहीं जाना।"

"काहे...?"

"मैं गई थी। अम्मा-बापू और घर के सभी लोगों ने, मुझे पहचानने तक से इंकार कर दिया।"

कौन तेरा बाप ?

सुरेश वशिष्ठ

आरती स्कूल से सीधे घर आई। बस्ता फर्श पर पटका और माँ से सवाल किया—"अम्मा मेरे पिता कौन है?"

"आज अचानक यह क्यों पूछ रही है बिटिया?"

"तो बता भी दो न... कौन हैं मेरे पिता और कहाँ रहते हैं?"

अम्मा की आँखों में आँसू छलक आए। लाचार निगाहें बिटिया पर डालते हुए कहने लगी—"बेटी, तू किसकी औलाद है, यह जानने का तुझे पूरा हक है; लेकिन मुझे तो उन तीनों की सूरतें भी ठीक से याद नहीं...नाम तो कैसे जान पाती?"

"क्या कह रही हो अम्मा !" आरती की आँखें फैल गई।

"सच तो यही है बिटिया।...एक दिन बस्ती में दंगा भड़क उठा और भगदड़ मच गई। दंगाईयों ने घरों में आग लगाना शुरू कर दिया, लोगों की जान लेना शुरू कर दिया।"

"कौन थे दंगाई और कहाँ से आए थे?" बेटी पूछने लगी।

"कहीं बाहर से आए थे। उनका क्या मकसद रहा, मैं नहीं जानती। तीन दंगाईयों को मुझ पर दया आ गई। एक बोला—"इसे मारते नहीं, भोगते हैं।" फिर तीनों ने मुझे जी-भर भोगा।....अब उनमें से, कौन तेरा बाप है....नहीं जानती?"

वायदा

बीमार सरिता बूढ़े ससुर और पति के लिए चाय-नाश्ता बनाकर लाई। मेज पर रखने लगी तो धड़ाम से गिर पड़ी। ससुर और पति दौड़े। देखा तो—देह मिट्टी हो गई थी। पति आर्त्तनाद कर उठा।

पिता उसे हिम्मत देने लगे—"पोते और बहू का विदेश जाकर बस जाना माँ को रास नहीं आया। यादों ने इसे दीमक की तरह खोखला कर दिया था। रो नहीं, अब संभाल अपने को ! इसे भी कितना समझाया लेकिन समझ न सकी।"

ससुर ने विदेश में बैठे पोते को फोन मिला दिया। उधर से आवाज आई—"दादू, नींद के समय भी परेशान करते हो?"

"नहीं बेटा, तुम्हें बताना था—तुम्हारी माँ नहीं रही।"

"ओह ! यह तो बहुत बुरा हुआ। मम्मी क्या बीमार थी?"

"हाँ बेटा, उसे तुम्हारे दूर जाने का गम था। तुम्हारी यादें उसे व्यथित करती थीं।....अब जल्दी से घर लौट आ !"

"सॉरी दादू ! मैं अभी नहीं आ सकता।....वहाँ आप हैं, पापा हैं, मिलकर सब निपटा लो ! यह वायदा रहा कि पापा जब जाएँगे, तब जरूर आऊँगा।"